074464

कुल पृष्ठ संख्या 32 (कवर पेज सहित)   क्रम संख्या.................................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

...सिवाय उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम — हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ..कृषि विज्ञान..

परीक्षा का दिन ..गुरुवार..

दिनांक ..21-03-2024..

नोट :— परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :— (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15¼ को 16, 17½ को 18, 19¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	8	19	4
2	5	20	4
3	8	21	
4	1½	22	
5	1½	23	
6	1½	24	
7	1½	25	
8	1½	26	
9	1½	27	
10	1½	28	
11	1½	29	
12	1½	30	
13	1½	31	
14	1½	योग	56
15	1½	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	56	छप्पन
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 38608

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मेपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 179/2024

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

1. — — — — — — — — ?

प्रश्न क्र.सं.	उत्तर
[i]	[द] सुनहरा पीला
[ii]	[द] उपर्युक्त सभी
[iii]	[अ] पी. एस. बी.
[iv]	[द] कल्ले फूटान अवस्था
[v]	[ब] 100-300 मिमी.
[vi]	[स] 21%
[vii]	[अ] बेरी-बेरी
[viii]	[द] आयोडीन की कमी से
[ix]	[अ] 100 X 100 X 100 से.मी.
[x]	[ब] बेल
[xi]	[स] 4.14 %
[xii]	[द] चोकला
[xiii]	[ब] टिक फीवर
[xiv]	[अ] मुम्बई
[xv]	[अ] 12-18 घण्टे के बीच
[xvi]	[ब] नागौरी

8

2. — — — — — — — — — ?

(i) रिजका के बीजों का राइजोबियम मेलीलोटी प्रजाति के जैव उर्वरक द्वारा बीजोपचार किया जाता है।

(ii) हमारे देश मे कुल शुद्ध कृषि क्षेत्र का ~~लगभग~~ लगभग 58 प्रतिशत वर्षा पर आधारित है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		(iii) विटामिन बी-1 का रासायनिक नाम थायमीन है।
5		(iv) राजस्थान में मई-जून के माह में अधिक तापमान के कारण चलने वाली गर्म हवाओं को 'लू' कहते हैं।
		(v) बेर रैह्मनेसी कुल का फलवृक्ष है।
		(vi) फलों की डिब्बाबंदी में 100°C तापक्रम पर संसाधित किया जाता है।
		(vii) गौ-मूत्र का प्रयोग कृषि में जैविक (जीवाणुनाशी व कवकनाशी) प्रकार के कीटनाशी के रूप में किया जाता है।
		(viii) राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, हरियाणा में स्थित है।
		(ix) पशु माता (पशु प्लेग) रोग सभी जुगाली करने वाले पशुओं में होता है।
		(x) डेयरी के क्षेत्र मे आत्मनिर्भर होने के लिए श्वेत क्रान्ति का सूत्रपात किया गया।
1	3.	(i) मृदा उत्पादकता से अभिप्राय "किसी मृदा की प्रति हेक्टेयर पैदावार देने की क्षमता से है।"

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) 1 हरी खाद वाली फसल शीघ्र वृद्धि करने वाली होनी चाहिए।

(iii) 1 शुष्क कृषि बिना सिंचाई के वर्षा आधारित की जाती है।

(iv) 1 अंगूर की फसल में संधाई (ट्रेनिंग) की विधियों में एक पंडाल विधि है।

8 (v) 1 सिरका, सोडियम बेंजोएट आदि परिरक्षक पदार्थ है।

(vi) 1 मालपुरा नस्ल की भेड़ का रंग सफेद होता है तथा इसे केन्द्रीय भेड़ ऊन अनुसंधान संस्थान पर संकरण के लिए रखा गया है।

(vii) 1 खुरपका - मुँहपका रोग मे पशु के पैरो मे छाले हो जाते है तथा पशु द्वारा इन्हें मुँह से चाटने पर मुँह में छाले हो जाते है।

(viii) 1 खाज एवं खुजली रोग के उपचार हेतु हिमेक्स मलहम तथा सल्फर पाउडर को तेल में मिलाकर लगायें।

खण्ड - ब

1½ 4. ------------?

उत्तम बीज के गुण :-

उत्तम बीज के तीन गुण निम्नलिखित है -

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) आनुवांशिक शुद्धता –
उत्तम बीज आनुवांशिक रूप से शत - प्रतिशत होना चाहिए । अन्य किसी प्रकार के बीजों की मिलावट न हो ।

(ii) बीज ओज –
बीज ओज से तात्पर्य - बीज की उम्र, आकृति एवं स्वास्थ्यता से है। यह गुण उत्तम बीज में होना आवश्यक है।

(iii) वास्तविक उपयोगिता मान –
उत्तम बीज का वास्तविक उपयोगिता मान 75 से कम नहीं होना चाहिए ।

---

5. _ _ _ _ _ _ _ _ ?
भारत में जैविक खेती की प्रचुर संभावना के कारण :
निम्न प्रकार से है –

(i) प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता –
भारत में जैविक खेती होने की प्रचुर संभावना है क्योंकि भारत में जैविक खेती हेतु प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता प्रचुर है।

(ii) प्रति हेक्टेयर कम उर्वरकों व पेस्टीसाइड्स का उपयोग –
भारत में अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जा रहा है। इस कारण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भारत जैविक खेती की प्रचुर संभावनाएँ है।

(iii) जैविक खाद का उपयोग- भारत में जीवांश खादों का प्रयोग अधिक से अधिक कर जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है।

1½

6. — — — — — — ?

सिंचाई के उद्देश्य:- सिंचाई के अनेक उद्देश्य है जिनमें से तीन ~~उ~~ उद्देश्य निम्नलिखित है -

(i) मृदा में नमी बनाए रखने सिंचाई का महत्वपूर्ण योगदान है।

(ii) पौधों की वृद्धि के लिए पौधों में सिंचाई की जाती है।

(iii) पौधों में सिंचाई अर्थात् कृत्रिम रूप से आवश्यकता-अनुसार जल से देने उत्पादन अच्छा होता है।

1½

7. — — — — — — ?

जीभी ग्राफ्टिंग-

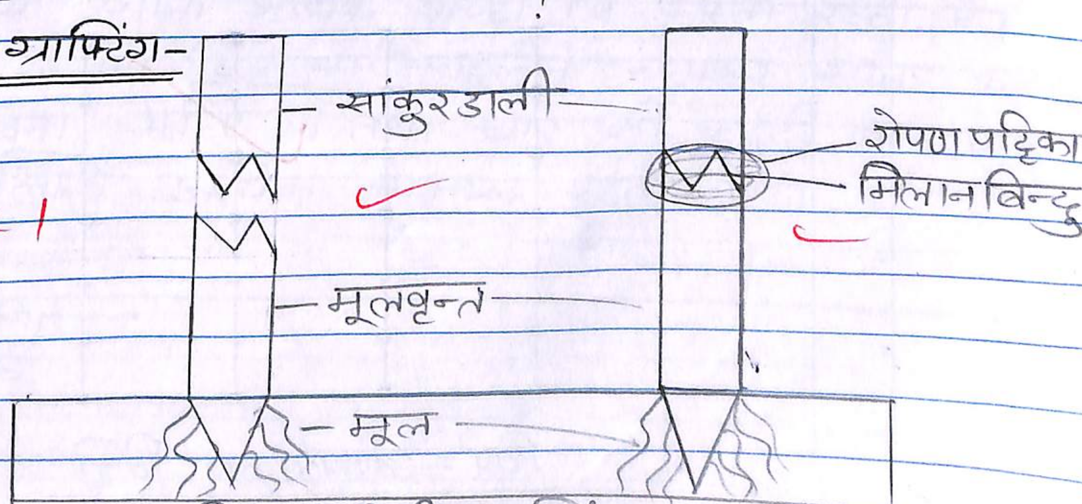

चित्र - जीभी ग्राफ्टिंग

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जीभी ग्राफ्टिंग -

इस विधि में मूलवृन्त और सांकुर डाली का उपयोग किया जाता है। जिसमें मूलवृन्त पर ऊपर से नीचे की ओर तथा सांकुर डाली पर नीचे से ऊपर की ओर कटान लगाया जाता है। मूलवृन्त व सांकुर डाली को आपस में मिलाकर रोपण पट्टिका से बाँध दिया जाता है। और नया पौधा तैयार कर लिया जाता है।

1½

8. — — — — — — — ?

फलोद्यान लगाने की आयताकार विधि:-

इस विधि में वर्गाकार विधि की तरह ही रेखांकन किया जाता है लेकिन इसमें पौधे से पौधे की दूरी लाइन से लाइन की दूरी से कम होती है।

लाभ -

इस विधि से बाग सघन नहीं होता है तथा फलवृक्षों को फैलने एवं वृद्धि के पर्याप्त स्थान मिलता है।

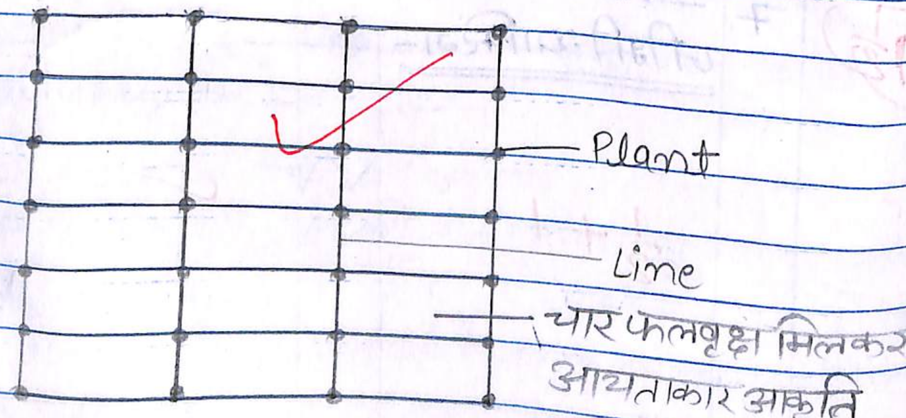

चित्र - आयताकार विधि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1½

9. — — — — — — — — ?

फलोद्यान में गर्म हवाओं से बचाव के उपाय :-

गर्म हवाओं से बचाव हेतु फलोद्यान में निम्न 3 उपाय किये जाने चाहिए -

(i) ½ फलोद्यान में पश्चिम दिशा में वायुरोधी वृक्ष लगाकर गर्म हवाओं से बचाया जाता है।

(ii) ½ फलोद्यान में गर्म हवाओं से बचाव के लिए टाटियाँ या सरकण्डे लगाये जा सकते हैं।

(iii) ½ गर्म हवाओं से बचाव हेतु पौधों पर चूना लेपकर देते हैं जिससे फलोद्यान को लू से बचाया जा सकता है।

1½

10. — — — — — — — ?

पशु आहार - प्रबन्धन :-

पशु आहार प्रबन्धन करने हेतु निम्न 3 बातों का ध्यान रखना चाहिए -

(i) ½ पशु आहार में जहाँ तक संभव हो स्थानीय व सस्ते चारे का उपयोग करें।

(ii) ½ पशु आहार में चारा बाजार से खरीदने की अपेक्षा स्वयं उगाना अधिक अच्छा एवं सस्ता रहता है।

(iii) ½ चारे को 'हे' या 'साइलेज' बनाकर संग्रह करके रखना चाहिए। तथा चारे की कुट्टी बनाकर खिलाना अधिक लाभप्रद रहता है।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1½

11. — — — — — — — ?

सिरोही नस्ल का उत्पत्ति स्थल, वितरण व उपयोगिता :-

उत्पत्ति स्थल — ½
राजस्थान का सिरोही जिला ।

वितरण — ½
यह नस्ल राजस्थान के सिरोही जिले तथा इसके समीपवर्ती जिलों, सीकर, झुन्झुनु आदि जिलों में पाई जाती है ।

उपयोगिता — ½
(i) सिरोही नस्ल मांस व दूध दोनों के लिए पाली जाती है ।
(ii) इस नस्ल की मादा का वजन 50 kg व नर का वजन लगभग 80-90 kg होता है ।

1½

12. — — — — — — — — ?

धान की नर्सरी तैयार करने की विधियाँ :-

धान की नर्सरी तैयार करने की निम्नलिखित तीन विधियाँ है -
(i) ½ गीली क्यारी विधि
(ii) ½ शुष्क क्यारी विधि
(iii) ½ डेपोग विधि ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1½ 13. — — — — — — — ?

जहरवाद रोग से बचाव के उपाय :-

जहरवाद रोग से बचाव हेतु निम्न उपाय किये जा सकते हैं :-

(i) ½ संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए ।

(ii) ½ जहरवाद रोग से बचाव हेतु B.Q. वैक्सीन का टीका अवश्य लगवाना चाहिए ।

(iii) ½ मृत पशुओं को जमीन में गहरा दबा दे या जला देना चाहिए ।

1½ 14. — — — — — — — ?

फड़किया रोग के तीन उपचार :-

फड़किया रोग के उपचार निम्नलिखित हैं :-

(i) ½ फड़किया रोग के उपचार हेतु सल्फामिडिन का अन्तः शिरा इंजेक्शन दें ।

(ii) ½ फड़किया रोग के उपचार हेतु ई.टी.वी. वैक्सीन लगवानी चाहिए ।

(iii) ½ दर्द कम करने के लिए प्रेडनीसोलोन इंजेक्शन अन्तः शिरा लगवाना चाहिए ।

1½ 15. — — — — — — — ?

ऑपरेशन फ्लड का द्वितीय चरण :-

ऑपरेशन फ्लड का द्वितीय चरण 1 जुलाई 1978 में चलाया गया ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ऑपरेशन फ्लड प्रथम में जो वर्ग वंचित रह गए थे उनके लिए ऑपरेशन फ्लड द्वितीय चलाया गया। द्वितीय चरण ऊँचे व पहाड़ियों पर बसे लोगों को निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चलाया गया - दुधारू मवेशियों का विकास, दुग्ध उत्पादन स्तर बढ़ाना आदि।

खण्ड - स

16. — — — — — — — — ?

3

खरपतवारों के भौतिक व यांत्रिक नियंत्रण :- खरपतवारों के भौतिक व रासायनिक नियंत्रण की निम्नलिखित तीन विधियाँ हैं -

1

(i) हाथों द्वारा उखाड़ना :- खरपतवारों के नियंत्रण के लिए उन्हें हाथ से उखाड़कर खेत से बाहर निकाल दिया जाता है।

→ खरपतवार को उनके बाह्य आकार, रूप, रंग, आकृति के अनुसार अवांछित खरपतवार को खेत से बाहर निकालना रोगिंग कहलाता है। इस क्रिया द्वारा खरपतवारों का भौतिक व यांत्रिक नियंत्रण किया जाता है।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1

(ii) निराई - गुड़ाई करना :

खरपतवार को खेत से बाहर निकालने तथा भौतिक व यांत्रिक नियंत्रण करने हेतु में निराई गुड़ाई करना आवश्यक होता है। इसलिए बुआई के पश्चात खरपतवार अंकुरित होकर 3-4 पत्तियाँ निकल आती हैं तब खरपतवारों को निराई - गुड़ाई की क्रिया द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

1

(iii) उन्नत शस्य क्रियाएँ अपनाकर :

खरपतवारों को नियंत्रित करने हेतु खेत में उन्नत शस्य क्रियाएँ भौतिक व यांत्रिक रूप से अपनाकर खरपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है। अतः इन भौतिक एवं यांत्रिक विधियों द्वारा खेत को खरपतवार मुक्त किया जा सकता है।

---

3 | 17. — — — — — — — — — ?

आंवले का मुरब्बा बनाने की विधि :

आंवले का मुरब्बा की विधि के निम्नलिखित बिन्दु हैं -

(i) फलों का चयन

(ii) फलों की तैयारी व सफाई

(iii) फलों का गूदा निकालना

(iv) चासनी तैयार करना

(v) अंतिम बिन्दु परीक्षण

(vi) पात्र में भरना ।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) फलों का चयन -
आंवले का मुरब्बा तैयार करने हेतु साफ, बिना कटे फलों का चयन करना चाहिए।

(ii) फलों की तैयारी :-
फलों को अच्छी प्रकार से धो लेना चाहिए तथा स्वच्छ कपड़े से साफ कर फलों को तैयार करना चाहिए।

(iii) फलों का गूदा निकालना -
आंवले का मुरब्बा तैयार करने के लिए आंवलो को साफ करने के पश्चात उनको गोंदा जाता है तथा गूदा निकालने के लिए आंवलों को उबालना चाहिए। फिर उबालने के पश्चात गूदा निकालकर अच्छी तरह रख देना चाहिए।

(iv) चासनी तैयार करना :-
आंवले के मुरब्बे को तैयार करने की विधि मे चासनी तैयार कर मिलाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उबलते पानी मे चीनी मिलाकर चासनी तैयार कर ली जाती है। तथा गूदे व चासनी को मिला दिया जाता है। तथा अन्य मसाले मिला दिये जाते हैं।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(v) अंतिम बिन्दु परीक्षण -

फलों को तैयार कर मुरब्बे का अन्तिम बिन्दु परीक्षण निम्न प्रकार करते है -

(i) रिफ्रेक्टोमीटर द्वारा कुल घुलनशील पदार्थ की मात्रा ज्ञात कर लेनी चाहिए ।

(ii) मुरब्बा पूर्ण रूप से तैयार हो, यह जाँच कर लेना चाहिए ।

(vi) पात्र में भरना -

मुरब्बा तैयार होने पर उसे पात्र में भरकर सील कर देना चाहिए ।

---

2 18. - - - - - - - - ?

मेवाडी नस्ल का उत्पत्ति स्थल -

राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र (उदयपुर) । 1/2

वितरण - 1/2

इस नस्ल के ऊँट मेवाड़ क्षेत्र के समीपवर्ती जिलों में पाये जाते हैं।

विशेषताएँ :- 1

(i) इस नस्ल के ऊँटो का रंग गहरा भूरा होता है।

(ii) इस नस्ल के ऊँटो के तलवे मजबूत होते है।

(iii) इस नस्ल के ऊँटो की आँखे बडी चमकीली होती हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) इस नस्ल के ऊँटो का आकार मध्यम तथा मादा पशु थन मांसल होते हैं।

(v) इस नस्ल के ऊँट कृषि कार्यों में भी प्रयुक्त किये जा सकते हैं।

उपयोगिता – (1)

(i) मेवाडी नस्ल के ऊँटो का उपयोग बोझ ढोने में किया जाता है।

(ii) कृषि कार्यों के लिए प्रयुक्त होते हैं।

खण्ड – द

(4) 19. — — — — — — — ?

मक्का :-

वानस्पतिक नाम – जियामेज ✓
कुल – पोएसी ✓
उत्पत्ति स्थल – मेक्सिको ✓

(i) मृदा व खेत की तैयारी – (1)

मक्का की उन्नत खेती के लिए बलुई व बलुई मृदोमट मृदा उपयुक्त मानी जाती है।

→ मक्का की खेती के लिए एक जुताई खेत में मिट्टी पलटने वाले हल या देशी हल व कल्टीवेटर से की जाती है।

→ भूमिगत कीटों की रोकथाम के लिए थायरम का प्रयोग करते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) बीजदर एवं बीजोपचार :- 1

मक्का की उन्नत खेती के लिए मक्का की बीजदर 20-25 kg/h के लगभग रखी जाती है।

बीजोपचार -

मक्का के बीजों को थायरम या कैप्टॉन से उपचारित करें तथा अन्त में जैव उर्वरक एजोटोबैक्टर का प्रयोग करे। बीजोपचार FIR सिद्धान्त पर किया जाता है।

(iii) चार उन्नतशील किस्में :- 1

मक्का की चार उन्नतशील किस्में निम्न है -

(a) प्रताप मक्का - 1
(b) गंगा - 5
(c) गंगा - 11
(d) माही कंचन, MP चरी आदि।

(iv) पादप संरक्षण :- 1

मक्का में लगने वाले कीट व रोग निम्नलिखित है -

(a) तना छेदक कीट -

इस कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनॉलफॉस 25EC 1 ML प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

तना गलन रोग –
इस रोग पौधे का तना गलने के कारण खराब हो जाता है।

नियंत्रण –
इस रोग की रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम के घोल से प्रयोग करना चाहिए।

4 20. – – – – – – – ?

बेर –
वानस्पतिक नाम – जिजिफस मोरिसियाना
कुल – रैहमनेसी

(i) भूमि एवं जलवायु – 1
भूमि – बेर की खेती के लिए बलुई एवं बलुई दोमट मृदा उपयुक्त मानी गई है।

जलवायु –
बेर की खेती के लिए शुष्क व गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है।

(ii) चार उन्नतशील किस्में – 1
बेर की चार उन्नत किस्में निम्न प्रकार है –
(a) गोला
(b) थार सेविका
(c) मूण्डिया
(d) सेब, जोगिया आदि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) पौधे लगाने की विधि –
बेर के पौधे लगाने के लिए गड्डे का आकार 75 x 75 x 75 cm. होता है तथा पौधे से पौधे व लाइन से लाइन की दूरी 6-8 मीटर x 6-8 मीटर होती है।
→ बेर के पौधे लगाने हेतु गड्डे एक माह पूर्व तैयार कर लिए जाते हैं। तथा गड्डों में गोबर की खाद, सुपर फॉस्फेट आदि आवश्यकता अनुसार डालते हैं।

(iv) कीट एवं व्याधियाँ :-
बेर में लगने वाले कीट व रोग निम्न प्रकार है -
कीट -
बेर की फल मक्खी –
यह फलों को खाकर उन्हें खराब कर देती है जिससे फल सड़ जाते हैं।
नियंत्रण -
बेर की फल मक्खी के नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटॉन तथा डाई मेथोएट का प्रयोग करें।

रोग -
बेर का छाछ्या रोग –
इस रोग में फलों पर सफेद रंग की चूर्णिल वृद्धि दिखाई देने लगते हैं। अधिक प्रकोप होने पर पौधे की पत्तियाँ व टहनियाँ भी प्रभावित हो जाती हैं।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रोकथाम -

(i) बेर के छाछ्या रोग के नियंत्रण के लिए डाइनोकेप 0.1 % के घोल का छिड़काव करें ।

(ii) सल्फर धूलि के पाउडर का प्रयोग करें ।

समाप्त

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024